बी. एड. द्वितीय वर्ष
सत्र - 2018 -2020
विषय - स्कूल प्रबंधन एवं नेतृत्व
कोर्स - 11(e) / यूनिट - 1 (a)
<u>प्रकरण - विद्यालय एवं समुदाय</u>
व्याख्यान सं. - 11

डॉ. अमोद कुमार सिन्हा
सहायक प्राध्यापक,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
AND कॉलेज,
शाहपुर पटोरी, समस्तीपुर

<u>भूमिका</u>

'समुदाय' शब्द अंग्रेजी के शब्द 'Community (कम्युनिटी)' का हिंदी रूपांतर है। “Community” दो शब्दों के संयोग से बना है - 'Come' एवं 'Minus' जिनका अर्थ क्रमशः 'साथ आना' एवं 'साथ-साथ सेवा' करना है। अर्थात् समुदाय वह संस्था है जहाँ व्यक्ति साथ मिलकर रहते हैं एवं परस्पर सेवारत रहते हैं।

महान अमेरिकी शिक्षाविद् जॉन डिवी के अनुसार - किसी समुदाय के रहने के लिए मनुष्यों के लिए कुछ बातें आवश्यक होती हैं। इसमें आपसी सम्प्रेषण के तरीके ही वह माध्यम होते हैं, जसके कारण वे अपनी विशिष्ट पहचान के अधिकारी होते हैं। एक समुदाय निर्मित होने के लिए जिन सामान्य बातों की आवश्यकता होती है , वे हैं - समुदाय के उद्देश्य, विश्वास, महत्वकाँक्षाएँ, ज्ञान तथा आम साझेदारी।

अतः किसी समुदाय के अंतर्गत व्यक्तियों की परस्पर सम्बद्धता, पारस्परिक समझ, समान भाषा, विश्वास, आस्थाएँ तथा समुदाय के प्रति समान भावना का होना आवश्यक है। वास्तव में सामुदायिक संबंधों के लिए "यह हमारा समुदाय है, हम इसके हैं" की भावना आवश्यक है।

<u>विद्यालय-समुदाय सम्बन्ध</u>

किसी समुदाय में रहने वाले सभी मनुष्यों की भाषा, जीवनशैली, मूल्य, भावनाएँ, आस्थाएँ, और जीवन के उद्देश्य लगभग समान होते हैं। जीवन को सुखमय व प्रसन्नता से व्यतीत करने के लिए समुदाय का सदस्य होना न केवल आवश्यक है, बल्कि अपररिहार्य भी है। इसलिए विद्यालय का कर्त्तव्य होता है कि वह समुदाय के भावी नागरिकों को समुदाय की अपेक्षाओं के अनुरूप तैयार करे। अतः विद्यालय के प्रधानाचार्य एवं शिक्षकों को समुदाय के आवश्यक कारकों का ज्ञान होना अवहसिक है। बृहत् सामजिक पृष्टभूमि में विद्यालय की स्थिति निम्नांकित चित्र से स्पष्ट तौर पर समझी जा सकती है।

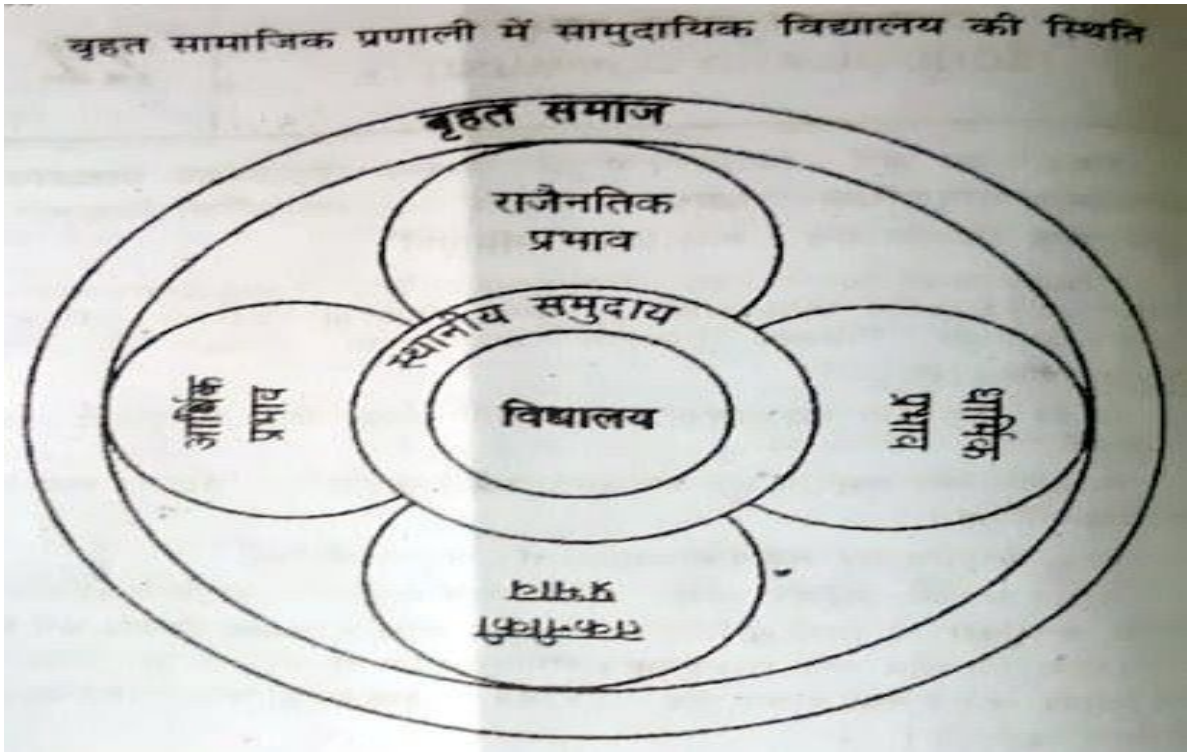

अन्य विद्यालय एवं सामुदायिक विद्यालय

ध्यान से अवलोकन करने पर तीन प्रकार के विद्यालय दृष्टिगोचर होते हैं - आदर्श विद्यालय, मॉडल स्कूल एवं सामुदायिक विद्यालय। इन विद्यालयों की स्थिति निम्नांकित चित्र द्वारा स्पष्ट की गयी है :-

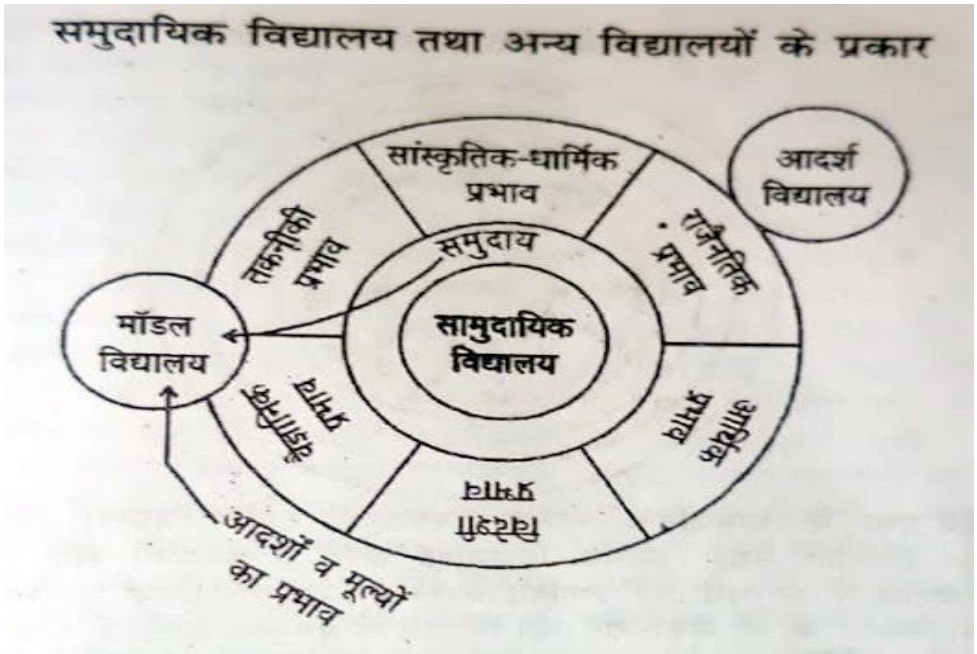

1. **आदर्श विद्यालय -** ऐसे विद्यालयों का लक्ष्य समुदाय व राष्ट्र के लिए सुसंस्कृत व आदर्श नागरिकों का निर्माण करना है। इस प्रकार के विद्यालयों के छात्रों को व्यावहारिक जीवन के अनुरूप समुदाय में समायोजन करने में कठिनाईओं का सामना करना पड़ता है।

2. **मॉडल विद्यालय -** ऐसे विद्यालय समुदाय व आदर्शों के बीच का मार्ग चुनकर छात्रों को तैयार करते हैं। एक ओर ये पाठ्चर्या में में आदर्शों की तरफ ध्यान देते हैं तो दूसरी ओर समुदाय से सम्बन्ध भी स्थापित रखने का प्रयास करते हैं।

3. **सामुदायिक विद्यालय -** ऐसे विद्यालयों पर राष्ट्रीय, राज्य व समुदाय की प्रथा एवं परम्पराओं का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है। विद्यालय के कार्यक्रम समुदाय-केंद्रित होते हैं। ऐसे विद्यालयों में विद्यार्थी समुदाय की समग्र गतिविधियों में भाग लेते हुए विद्याध्ययन करता है। वह समुदाय में व्याप्त गरीबी, पर्यावरण, सामाजिक समस्याओं, धार्मिक विश्ववासों , सामाजिक परम्परों आदि से प्रभावित होता है। भविष्य में ऐसे विद्यार्थी समाज के सक्रिय सदस्य होते हैं।